

DPN 6626

Title : स्वस्थानी मन्त्र SWASTHANI MANTRA

Run. No. 7351

Cat. No.

Micro. No.

Subject मन्त्र Mantra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. ✓ New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 16 × 8

Folios 11

Lines (in a page) 14

Compl. / Incompl. ✓

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. ✓ / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu ✓ /

Condition : fine / damaged ✓ by worms, rats, water ✓ /

Beginning, colophon, post-colophon :

15

10

5

5



पूर्वपूजास्मयामिनमः॥ सम
धनासाधनयाय॥ ॐ क्रिं श्री नैव
द्युर्लभपानसाधनस्वाहा॥

धनधनयानाकिबकुवाय॥

॥ ॐ दिगम्बरं ॐ स्वादि॥ ॥ समा

यिसलखनानन॥ ॥ ॐ ॐ ॐ दे

वदातार्यनमः॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

त्रयसिद्धयनमः॥ ॐ १०८ ॥ ना॥

दिगन्तासयायदिगपात्रवाय॥

॥ ॐ क्रिं श्री गमलषपूर्वदिगपात्र

मात्यस्वाहा॥ ॐ ॥ ॐ क्रिं श्री गमल

ष श्री गमलदिगपात्रमात्यस्वाहा॥

॥ श्री ॥ ॐ क्रिं श्री गमलषदक्रिनदि

गपात्रमात्यस्वाहा॥ ॐ ॥ ॐ क्रिं श्री

गमलषनेमलदिगपात्रमात्यस्वा

हा॥ ने ॥ ॐ क्रिं श्री गमलषपक्रिम

दिगपात्रमात्यस्वाहा॥ ये ॥ ॐ क्रिं

श्री गमलषवायुवदिगपात्रमा

त्यस्वाहा॥ वा ॥ ॐ क्रिं श्री गमलष

उद्रदिगपात्रमात्यस्वाहा॥ उ ॥ ॐ

क्रिं श्री गमलष ॐ सानदिगपात्रमा

त्यस्वाहा॥ ॐ ॥ ॐ क्रिं श्री गमलष

श्री (धदिगपात्रमात्यस्वाहा॥ श्री

ॐ क्रिं श्री गमलष उ (धदिगपात्र

मात्यस्वाहा॥ उ ॥ श्री यपात्रसथून

नय॥ धनवदनकृतपूजा॥ श्री या

कनीयाय॥ ॥ धनलीषिन्यास॥

मालयि॥ ॥ ॐ क्रिं श्री वृहदात्रन

ॐ विष्णवे नमः ॥ मूढधियः ॥

ॐ द्विं श्रीं नमः ॥ मूढधियः ॥

गच्छियः ॥ ॐ द्विं श्रीं लघनाथ ह

दयनमः ॥ ॐ द्विं श्रीं वल्लिनाथ ह

नमः ॥ नमः ॥ गुरुधियः ॥ ॐ

द्विं श्रीं लघनाथ नमः ॥ पालि

यः ॥ ॐ द्विं श्रीं विमनाथ नमः ॥

॥ मन्त्राग ॥ ॐ द्विं श्रीं हस्तनिल

कायनमः ॥ जय या य ॥ ॐ द्विं श्रीं

लघनाथ यदुदुसाहा ॥ ॐ १०८

जाकिस्त्री जाना जय या नादवयात

थवतैव ॥ ॥ काकुयाय ॥ धनपू

जायाय ॥ ज्ञायी ॥ साधनपूजा

आत्मपूजा ॥ गुरुपूजा ॥ न्यासयाय

दवार्जवाही याय पूजा मना

ॐ द्विं श्रीं नमः ॥

ॐ द्विं श्रीं लघनाथ जलानेव

चतुर्भिर्भूतैर्नृपैः कृष्णस्यैव नमः ॥

विदये जास्मै यामि नमः ॥

॥ आत्मपूजा गुरुपूजा ॥ कन्या

स ॥ हाऊनयं पुनाम ॥ पदपुत्रा

हामयक ॥ ॐ द्विं श्रीं दूदूदूदूदू

स्वाहा ॥ गमय ग्री ॥ ॐ द्विं श्रीं लघनाथ

दीददुतर्जोदतु नित्रं जनपुत्रा दया

॥ ऊ ॥ उवतु निः ॥ ॐ द्विं श्रीं हस्त

रुद ॥ ऊ ॥ उवतु निः ॥ ॐ द्विं श्रीं वाम

स्तुय रुद ॥ उवतु निः ॥ ॥ ॐ ॥

ॐ द्विं श्रीं नमः ॥ ॐ ॥ ॐ

द्विं श्रीं नमः ॥ ॐ ॥ ॐ

द्विं श्रीं नमः ॥ ॐ ॥ ॐ

द्विं श्रीं नमः ॥ ॐ ॥ ॐ

ॐ द्विं श्रीं नमः ॥ ॐ ॥ ॐ

ॐ द्विं श्री कनिष्ठाया नमः॥ कुनतन
 ॐ द्विं श्री कुटुम्बिकाया नमः॥ च
 सुया॥ ॐ द्विं श्री मित्राया स्वाहा॥ क
 यात्र॥ ॐ द्विं श्री वृक्षा उर्या नमः॥ ६
 मिखागम॥ ॐ द्विं श्री सिखाय नमः॥
 क्रयय॥ ॐ द्विं श्री कवचाय नमः॥
 लधिय॥ ॐ द्विं श्री न्यात्राय नमः॥ ८
 य॥ ॐ द्विं श्री सुवर्णाय नमः॥ ९
 गिका॥ ॐ द्विं श्री नासिकाया नमः॥
 क्रुतु॥ ॐ द्विं श्री मुखजिह्वाया नमः॥
 नूग॥ ॐ द्विं श्री हृदयाय नमः॥ ११
 यना॥ ॐ द्विं श्री ० महिर्वदाया नमः॥
 नरु॥ ॐ द्विं श्री वरुणाया नमः॥
 पात्रि॥ ॐ द्विं श्री पादकाया नमः॥
 कुनधू॥ ॐ द्विं श्री पृष्ठकाया नमः॥

ॐ

वाहादाय॥ ॐ द्विं श्री हस्ताय नमः॥
 म॥ ॐ द्विं श्री मूलाय नमः॥ ॥ ॐ द्विं श्री
 कर्मका सज्जटाङ्क विनावन नीन
 कुननीना कार्त्तु वि कल्पनिनाम
 यश्रीर्मकिचतैना कर्म विधिवृक्
 म॥ ॐ द्विं श्री विस्त्रूपनिना कार्त्तु
 लषनाथं देवतै म॥ ॐ द्विं श्री
 नाहानिर्घाततै काथमणाय कः
 यनउप॥ ॐ द्विं श्री रुका ॥ ॐ द्विं श्री
 रुद्रुद्राहा॥ ॥ गोत्राय॥ नाउ
 यय॥ ॐ नमः ४ श्रद्धासगुत्रजि को
 नाउचयनाथ्वन नाउनहघट
 पिंलुहयन विन्दू कहाकावने
 का विदजागिनाउवजाउउपुला
 कुने श्रुतहलपाउनु श्रुतनजा

15

गिनाउवजाउ। वृक्षनाककाज
 उ। उ०००तिनाउकांमयधगभादे
 कूथकाजायि॥३॥ ॐ नमः
 दसगुत्रिका॥ कानदंउरगलह
 प्रसिद्धगुत्रिपिन॥ आदसादस॥
 दे० उ० जय॥ ॥ धनवल्लिपूजा
 ॥ ॐ द्विं श्री गलवनाथवलीपिय
 दं रुद्र स्वाहा॥ पादपूजा॥ ॐ न
 द्विं नमः श्री नमः दू नमः रुद्र नमः
 स्वाहा नमः॥ धनसकलपूजा॥ वि
 ॐ द्विं श्री गलथलिद्धिसिद्धि रुद्र
 दाता॥ स्नाननमः चंदननमः सिद्धि
 लनमः श्रुतनमः परसूर्यनमः नैव
 दनमः॥ धधविस्वजनपूजा॥ नव
 नाथ वीनासिद्धिः दसमूडा
 ॥ न्यासयायस्वानकाकाय॥ ॥ व०

10

5

ॐ द्विं श्री गलवनाथः हृदयाय न
 मः ॐ सिं वल्लनमः ॐ सिं वायनमः
 ॐ कवचाय नमः ॐ न्यायाय नमः ॐ
 हस्ताय नमः॥ नाहावर्जगठिद्धि
 य स्वाकाकाय नाहामयक ॥३॥
 ॐ द्विं श्री रुद्र ध ३॥ पूजा॥ न
 सयद्वैः॥ स्वस्वानयाय स्वा
 सचानकिस्वद्वयवकयाजव
 नयलवजाकिवारयकाता
 ॐ द्विं श्री सूर्याय गनाय नमः॥
 आसनतावत॥ ॐ द्विं श्री स्वस्वा
 हवस्तु॥ ॥ ॐ नमः॥

15

थकनशालिप्रनामकिञ्चिद्वाधर्म
दसः॥ ॥ धनं न च न

सत्काजयाय ॥

10

ॐ द्विं श्रीगमलघनाथदेवता
विठ्ठवीमनाथकिं हृत्स्यं किं वि
नकं म॥ निजैकनात्मकं सर्वज्ञ
सिद्धमर्थकं विनीयाग॥

5

पुनामयायनाहामयकं हि दय
ॐ ॥ ॐ द्विं श्रीकृष्णकृष्णकृष्ण
हा॥ ॥ द्वासनियं गमयति म॥
ॐ द्विं श्रीनादिनूपायवीधहृत्

नूनादिनूपायधिसहि नञादत्त
गालषप्रवा दया॥

कनन्यासयायज्ञन॥ क्का ना

ॐ द्विं श्रीं श्रृंगुहात्यौ नम॥ वा ना

ॐ द्विं श्रीं वृक्षनिर्णयौ नम॥ दधुना

ॐ द्विं श्रीं मधुमात्यौ नम॥ अनामि

ॐ द्विं श्रीं अनामिकात्यौ नम॥ चिकि

ॐ द्विं श्रीं कनिष्ठात्यौ नम॥ कुव

यायहिनक॥ ॐ द्विं श्रीं कनवृक्षपृ

ष्टात्यौ नम॥ ॥ नृगधिय॥ ॐ द्विं

श्रीहृदयाय नम॥ ॥ वसूपाधिय॥

ॐ द्विं श्रीं मित्रस्य स्वाहा॥ ॥ मिखा

गा॥ ॥ ॐ द्विं श्रीं मिखाय वी खट्॥

वाहा॥ ॐ द्विं श्रीं वाहत्यानम॥ कय

पी॥ ॐ द्विं श्रीं कवचाय द्र॥ मिखा

ॐ द्विं श्रीं न्यायाय वी खट्॥ वाहा

य॥ ॐ द्विं श्रीं हस्ताय रुट्॥ ॥ धन

अनयाय होत्रो हा जलपाया

स्वीकिगजानदेवयातकाय ध

तवसूपात्रसक्य॥ ॥ ॐ द्विं श्रीं

दीर्गमत्रिगुनीत्मकनागीयनव

नजनआलधध्वन॥ ॐ अनादीना

सर्वव्यापिआगिसकलध्वनिमय

जातिसूत्रपीनिनाधनृध्वरुवृ

सनातनं ध्यानं रूपं महाध्यानं श्रीं
 गङ्गागमिष्ठिसिद्धिं ॥ ॐ नमो
 गवतं दर्शयतां यत्तु प्रवृत्तं गुणं
 मात्मनो वास्तव्यं वायनमः ॥ ॐ नमः
 गल्लेनाथं यत्तु दायं गुणं कधि
 पतयति त्वं दायं सनातनाय नमः
 नमः ॥ ॐ ॥ अथ कायपूजासंक्रयः ॥
 पूजास्तनयधनयाय ॥ ॐ किं श्रीं
 नाथं ज्ञानं पूज्यं राजनं अरितं त्वं
 नमः ॥ ॐ ॥ श्रीं किं श्रीं वायं यम
 नायि सतय ॥ संप्रदायं पूजा ॥
 ॐ बुद्धं वनमः ॐ बुद्धं वनमः ॐ

दायनमः ॐ ॐ नमः वायनमः ॐ स
 दासिवायनमः ॥ ॐ हृदयाय नमः
 ॐ ह्यादि ॥ ॐ किं श्रीं नमः दाय
 सपद ॥ अथ पात्रं यत्तु पूजायाय
 ॐ किं श्रीं जानिमः दसयत्तु ॥ कत्र
 यत्तु पूजा ॥ ॐ वत्तु नायनमः ॐ
 पापदयनमः ॐ गंगायनमः ॐ जम्
 यनमः ॐ वेवददावलि सत्रयति
 नमः दासिकावली ज्ञानमिनिधि
 कृत् ॥ ॐ नादायास वाहाका पूज्य
 धनयाय ॥ ॐ किं श्रीं सार्धं ति कारितं
 ० ह्यं नमः ॥ अथ यत्तु नीनलवसाय

नपिकायनात्वासदृधन॥ ॐ किं श्रीः सनानपूजा॥ ॐ ह्यानवचनक
 सर्वधन्यत्वाहा॥ अर्घ्यागुप्तनयनैष्व्यनमः॥ श्रीर्याजलीसकता
 धर्तखनसमहाश्याय॥ ॐ किं
 श्रीसर्वतसाधनायत्वाहा॥ ॥
 आत्मपूजायायवचनकृतं
 दि॥ ॐ किं श्री आत्मभिः प्रथमना
 नैवचनकृतपूष्यनमः॥ ॥
 आत्मसंकर्तन॥ ॐ किं श्री आत्मत
 त्वायनमः॥ यागतत्वायनमः॥ शिव
 तत्वायनमः॥ ॥ गुप्तमलुनपूजा
 कं गवः पूववाय॥ ॐ किं श्री अस्त
 लुमलाकार्याकं अस्तलाचनं
 त्वनैदसितं अस्तनमः॥ गुप्तनमः॥ हा॥ ध३॥ ॥ हाजनयनमस्तान

